# ५. सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण

अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ नयी विचार धाराएँ, नयी संकल्पनाएँ, नये दर्शन आदि का भी प्रसार हुआ । इसी तरह पश्चिमी विचार, संस्कृति का भारतीयों से परिचय हुआ । परिणामस्वरूप भारतीय समाज के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में परिवर्तन हुए ।

भारतीय समाज का पिछड़ापन उसकी अंधश्रद्धा, रूढ़ीप्रियता, जातिभेद, ऊँच-नीच की भ्रामक मान्यताओं और जिज्ञासाहीन तथा विश्लेषणात्मक वृत्ति के अभाव में निहित है; इसका बोध शिक्षित समाज को होने लगा । देश को उन्नति के पथ पर ले जाने के लिए भारतीय समाज में व्याप्त दोषों और अनिष्ट प्रवृत्तियों को समूल नष्ट करने तथा मानवता, समता, बंधुता पर आधारित नवसमाज निर्माण करने की आवश्यकता थी । भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को दूर करने हेतु शिक्षित, विचारक अपनी लेखनी द्वारा जनजागरण करने लगे । तत्कालीन भारत में प्रारंभ हुए इस वैचारिक जागरण को 'भारतीय पुनर्जागरण' कहते हैं ।

## ध सधार एवं समार सधार का यग

**ह्मो समार :** राजा राममोहन रॉय ने १८२८ ई.में बंगाल प्रांत में ब्राह्मो समाज की स्थापना की । उन्होंने अनेक भाषाओं और धर्मों का अध्ययन किया था । इसमें से उनकी अद्वैतवादी विचारधारा का विकास हुआ । एकेश्वरवाद, ऊँच-नीच का भाव न रखना, कर्मकांड के प्रति विरोध, प्रार्थना के मार्ग का अनुसरण करना आदि ब्राह्मो समाज के तत्त्व थे । राजा राममोहन रॉय ने सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा पद्धति का विरोध किया । विधवा विवाह, नारी शिक्षा का समर्थन किया । कोलकाता में हिंदू कॉलेज की स्थापना की । इसी भाँति, 'संवाद कौमुदी' समाचारपत्र द्वारा जनजागरण का कार्य किया ।

राजा राममोहन रॉय

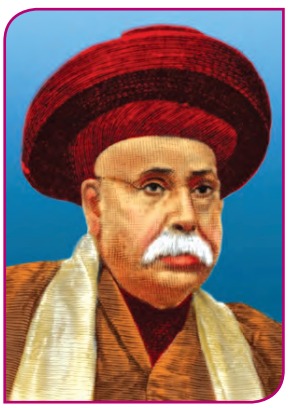
दादोबा पांडुरंग तर्खडकर

**ना समार :** दादोबा पांडुरंग तर्खडकर ने १८४८ ई. में मुंबई में परमहंस सभा की स्थापना की । कालांतर में परमहंस सभा विसर्जित हुई और उसी के कुछ सदस्यों ने प्रार्थना समाज की स्थापना की। दादोबा के बंधु डॉ. आत्माराम पांडुरंग प्रार्थना समाज के प्रथम अध्यक्ष थे । मुंबई विश्वविद्यालय के युवा स्नातक इस संस्था से जुड़ जाने से उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई ।

प्रार्थना समाज का कार्य न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानडे, डॉ.रा.गो. भांडारकर ने आगे बढ़ाया । मूर्तिपूजा के प्रति विरोध, एकेश्वरवाद, कर्मकांड को विरोध प्रार्थना समाज के कुछ सिद्धांत हैं । वे उपासना और प्रार्थना पर बल देते थे । प्रार्थना समाज ने समाज सुधार की दृष्टि से अनाथालय, स्त्री शिक्षा संस्था, श्रमिकों के लिए रात्रिशाला, दलितों के लिए संस्थाएँ प्रारंभ कीं । प्रार्थना समाज के सदस्य महर्षि विठ्ठल रामजी शिंदे ने 'डिप्रेस्ड क्लासेस मिशन' की स्थापना की तथा उसके द्वारा सामाजिक समस्याओं को हल करने का प्रयास किया ।

**सतयशोधक समार :** महात्मा जोतीराव फुले ने १८७३ ई. में सत्यशोधक समाज की स्थापना की । सत्यशोधक समाज ने समता सिद्धांत पर आधारित समाज निर्माण करने का कार्य किया । उन्होंने छुआ-छूत प्रथा का विरोध किया । साथ ही, बहुजन समाज की शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा का उन्होंने समर्थन किया ।

महात्मा जोतीराव फुले

महात्मा जोतीराव फुले ने 'ब्राह्मणांचे कसब' (ब्राह्मणों का कौशल), 'गुलामगिरी', 'शेतकऱ्याचा आसूड' (किसान का चाबुक), 'सार्वजनिक सत्यधर्म' जैसी पुस्तकों के माध्यम से समाज का पुनर्जागरण किया । स्त्री-पुरुष अथवा मनुष्य-मनुष्य के बीच भेदभाव करनेवाली रीति-रिवाजों की कड़ी आलोचना की ।

**आ समाज :** स्वामी दयानंद सरस्वती ने १८७५ ई. में आर्य समाज की स्थापना की । वेदों पर भाष्य करने वाला 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथ लिखा । उन्होंने प्रतिपादन किया कि प्राचीन वैदिक धर्म ही सच्चा और सत्य धर्म है तथा उसमें जाति-पाँति को स्थान नहीं था । आर्य समाज का घोषवाक्य-'वेदों की ओर चलिए' था । आर्य समाज की संपूर्ण भारत में शाखाएँ खुल गईं । आर्य समाज के माध्यम से स्थान-स्थान पर शिक्षा संस्थान खुल गए।

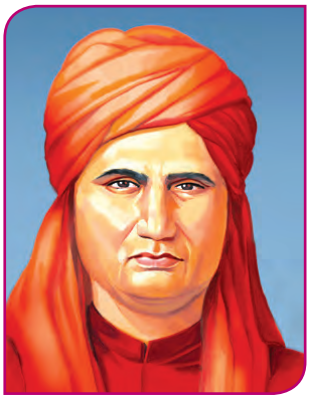
स्वामी दयानंद सरस्वती

**ण शन :** रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानंद ने १८९७ ई. में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की । रामकृष्ण मिशन ने लोकसेवा के अनेक कार्य किए । इस मिशन ने अकालग्रस्तों की सहायता करना, रोगी, दीन-दुर्बलों को औषधियों की सहायता पहुँचाना, स्त्री शिक्षा, आध्यात्मिक उन्नति जैसे क्षेत्रों में कार्य किया और आज भी यह कार्य कर रहा है । स्वामी विवेकानंद उत्तम वक्ता थे । उन्होंने १८९३ ई. में अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्वधर्म परिषद में हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया । भारत के युवाओं को संदेश देते हुए कहा, ''उठो, जाग जाओ और लक्ष्य प्राप्त होने तक रुको मत ।''

स्वामी विवेकानंद

**ख समाज सुधार :** सिख धर्म में सुधार लाने के लिए अमृतसर में 'सिंह सभा' की स्थापना हुई । इस संस्था ने सिख समाज में शिक्षा प्रसार और आधुनिकीकरण का कार्य किया । कालांतर में 'अकाली आंदोलन' ने सिख समाज में चलने वाली सुधारवादी परंपरा को आगे बढ़ाया ।

**सी यक सुधार :** जब ब्रिटिश सत्ता का भारत में विस्तार हुआ; तब भारत की महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी । उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था । उनके साथ समानता का व्यवहार नहीं किया जाता था । समाज में बालविवाह, वृद्ध-कुमारी विवाह, दहेज पद्धति, सती प्रथा, केशवपन, विधवा विवाह को विरोध जैसी कुप्रथाएँ प्रचलित थीं । तत्कालीन गवर्नर लॉर्ड बेंटिक को सती प्रथा पर रोक लगाने वाले कानून को बनाने के लिए राजा राममोहन रॉय जैसे समाज सुधारक ने सहायता की । गोपाल हरि देशमुख उर्फ लोकहितवादी ने शतपत्रों द्वारा स्त्री-पुरुष समानता का समर्थन किया ।

गोपाल हरि देशमुख

सावित्रीबाई फुले

महात्मा फुले ने १८४८ ई. में पुणे के भिडे बाड़ा में लड़कियों की पहली पाठशाला खोली । इस कार्य में उन्हें उनकी पत्नी सावित्रीबाई का सहयोग प्राप्त हुआ । समाज के कर्मकांडी लोगों द्वारा की गई आलोचना, निंदा को

सहकर भी सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा का कार्य आगे बढ़ाया । महात्मा फुले ने अपने घर में बालहत्या प्रतिबंधक गृह स्थापित किया । केशवपन की पद्धति बंद हो; इसलिए उन्होंने नाइयों की हड़ताल करवाई । विधवाओं के पुनर्विवाह को मान्यता प्राप्त करा देने के लिए पं. ईश्वरचंद्र विद्यासागर, विष्णुशास्त्री पंडित और वीरेश लिंगम पंतलु ने विशेष प्रयास किए ।

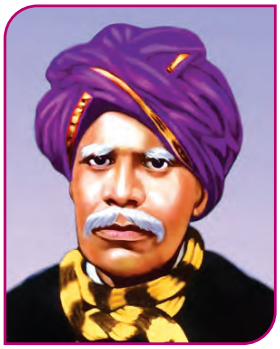
वीरेशलिंगम पंतलु

गोपाल गणेश आगरकर ने अपने 'सुधारक' समाचारपत्र द्वारा बालविवाह कानून पर अपने स्पष्ट विचार व्यक्त किए । महर्षि विठ्ठल रामजी शिंदे ने मुंबई में देवदासी प्रथा के विरुद्ध परिषद का आयोजन कराया । ताराबाई शिंदे ने 'स्त्री-पुरुष तुलना' ग्रंथ द्वारा अत्यंत ज्वलंत और कठोर भाषा में महिलाओं के अधिकारों का समर्थन किया । महर्षि धोंडो केशव कर्वे ने पुणे में 'अनाथ बालिकाश्रम' प्रारंभ किया । विधवाओं, परित्यक्ताओं के साथ सभी महिलाएँ शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन सकें; यह उनका उद्देश्य था । उनके प्रयासों के फलस्वरूप ही भारत में बीसवीं शताब्दी का प्रथम महिला विश्वविद्यालय खुला । पंडिता रमाबाई ने 'शारदासदन' संस्था की स्थापना कर दिव्यांग बच्चों, लड़कियों के भरण-पोषण का दायित्व स्वीकारा । रमाबाई रानडे ने 'सेवासदन' संस्था के माध्यम से महिलाओं के लिए परिचारिका (नर्स) पाठ्यक्रम प्रारंभ किया । उन्होंने सरकार के पास माँग की कि महिलाओं को मतदान का अधिकार मिलना चाहिए । डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने अपने लेखन द्वारा स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों को वाणी दी । महात्मा गांधी ने स्त्री शिक्षा का समर्थन किया । महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में उल्लेखनीय योगदान दिया है ।

महर्षि धोंडो केशव कर्वे

स्त्री सुधार आंदोलनों के फलस्वरूप समाज में प्रचलित अनिष्ट और अन्यायकारी प्रथाएँ बंद होने में सहायता मिली । स्त्रियों की समस्याओं को वाणी मिली । महिलाएँ अपने विचार लेखन द्वारा व्यक्त करने लगीं । शिक्षा के फलस्वरूप जीवन के सभी क्षेत्रों में उनका कार्य और कर्तृत्व निखार पा रहा है ।

**थोड़ा सोचो –**

- यदि समाज सुधारकों ने स्त्री शिक्षा का प्रारंभ नहीं किया होता तो ..
- वर्तमान समय में स्त्रियों के जीवन में शिक्षा के कारण कौन-से परिवर्तन हुए हैं ?
- क्या तुम्हें लगता है कि आज भी स्त्री शिक्षा हेतु प्रयास करने की आवश्यकता है ? यदि हाँ तो कौन-से प्रयास करने चाहिए ?

**मुस्लिम समाज सुधार आंदोलन :** अब्दुल लतीफ ने मुस्लिम समाज में धर्म सुधार का प्रारंभ किया । उन्होंने बंगाल प्रांत में 'द मुहम्मदन लिटरेरी सोसाइटी' संस्था की स्थापना की । सर सैयद अहमद खाँ ने 'मुहम्मदन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज' की स्थापना की । कालांतर में इसी कॉलेज का अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में परिवर्तन हुआ । उन्होंने पश्चिमी विज्ञान और तकनीकी का समर्थन किया । उनका दृढ़ मत था कि जब तक मुस्लिम समाज पश्चिमी शिक्षा और विज्ञान का अंगीकार नहीं करेगा, तब तक उसकी उन्नति नहीं होगी ।

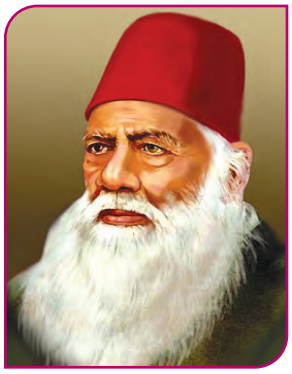
सर सैयद अहमद खाँ

**हिंदू समाज सुधार आंदोलन :** हिंदू समाज को सम्मान का स्थान मिले; इसलिए १९१५ ई. में 'हिंदूमहासभा' संगठन की स्थापना हुई । पं.मदन मोहन मालवीय ने 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' की

डॉ.केशव बलिराम हेडगेवार

नींव रखी । डॉ.केशव बलिराम हेडगेवार ने १९२५ ई. में 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की नागपुर में स्थापना की । हिंदुत्ववादी युवाओं का अनुशासनबद्ध और चरित्रसंपन्न संगठन खड़ा करना उनका उद्देश्य था ।

स्वातंत्र्यवीर वि.दा.सावरकर ने रत्नागिरी में पतित पावन मंदिर का निर्माण करवाया जहाँ हिंदू धर्म की सभी जातियों को खुला प्रवेश था । सहभोज आदि उपक्रम चलाए ।

**क्या तुम जानते हो ?**

**अन्र पुन गरण की र ा :** सुधार आंदोलन की भाँति ही पुनर्जागरण युग में साहित्य, कला और विज्ञान जैसे क्षेत्रों में हुई प्रगति भी महत्वपूर्ण थी । साहित्य के क्षेत्र में गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर को तो विज्ञान के क्षेत्र में सी.वी.रामन को नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ । इसके आधार पर भारत की प्रगति की कल्पना की जा सकती है। इस प्रगति के परिणामस्वरूप आधुनिक भारत का निर्माण हुआ । कहानियों-उपन्यासों द्वारा स्वतंत्रता की प्रेरणा मिलने लगी । समाज सुधार का विचार भी मुखर होने लगा ।

इस कालखंड में महिलाएँ भी लेखन करने लगीं । नये समाचारपत्र और पत्रिकाएँ समाज सुधार और राजनीतिक जागरण का वहन करने वाली साधन बनीं ।

इस कालखंड में कला क्षेत्र में भी उन्नति हो गई । संगीत अधिकाधिक लोकाभिमुख होने लगा । भारतीय शैली और पश्चिमी तकनीकी के मेल से नयी चित्रकला का उदय हुआ ।

विज्ञान से संबंधित अनेक पुस्तकें लिखी जाने लगीं । भारत की उन्नति के लिए प्रयोगशीलता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का जो महत्व है; उसका बोध लोगों को होने लगा।

आधुनिक भारत के इतिहास में पुनर्जागरण की यह अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण है । स्वतंत्रता, समता, राष्ट्रवाद जैसे विचारों से अभिभूत सुधारकों ने राजनीतिक क्षेत्र में राष्ट्रव्यापी आंदोलन खड़ा किया । इसका अध्ययन हम अगले पाठ में करेंगे ।

## ्रि ध्रार

**१. लद्द गए ल प से उलच्च ल प चुनकर कथन पुनः लर्ख्रि ो ।**

(सर सैयद अहमद खाँ, स्वामी विवेकानंद, महर्षि विठ्ठल रामजी शिंदे)

(१) ........ ने 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की ।

(२) .......... ने 'मुहम्मदन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज' की स्थापना की ।

(३) 'डिप्रेस्ड क्लासेस मिशन' की स्थापना .......... ने की ।

**२. लम्म सारणी पूण करो ।**

| समाज सुधारक का नाम | संथा | का | संथा के कार |
|---|---|---|---|
| राजा राममोहन रॉय | .......... | संवाद कौमुदी | ........ |
| .............. | आर्यसमाज | ........... | ........ |
| महात्मा फुले | ........... | गुलामगिरी | ........ |

**३. लम्म को कारणसलह ्प करो ।**

(१) भारत में सामाजिक, धार्मिक परिवर्तन के आंदोलन प्रारंभ हुए ?

(२) महात्मा फुले ने नाइयों की हड़ताल करवाई ?

**४. तम्पिपणी लर्ख्रि ो ।**

(१) रामकृष्ण मिशन

(२) सावित्रीबाई फुले के स्त्रीविषयक सुधार कार्य

**उप म**

(१) 'स्त्री शिक्षा' विषय पर विद्यालय में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन करो ।

(२) समाज सुधारकों के छायाचित्रों (फोटो) का संग्रह करो ।

9AKUPX